International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 01-09-2020; Accepted: 15-09-2020; Published: 02-10-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 5; 2020; Page No. 58-61

चौलुक्य वंश का राजनीतिक इतिहास एवं साम्राज्य विस्तार हेतु संघर्ष

रेनू सिंह
(शोध छात्रा), प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
अन्हिलवाड़ की चौलुक्य साम्राज्य के उदय से पूर्व गुजरात का इतिहास समान्यतः कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार वंश से संबंधित रहा है। प्रतिहार वंश के शासक महेन्द्रपाल का साम्राज्य गुजरात तक विस्तृत था तथा उसके उत्तराधिकारी महीपाल ने भी कम से कम 914 ई0 तक यहां अपना अधिकार बनाए रखा। महीपाल की राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय (915 ई0 से 917 ई0) द्वारा पराजय के पश्चात प्रतिहारों की स्थिति निर्बल पड़ गई। राष्ट्रकूटों के साथ अनवरत संघर्ष के परिणाम स्वरूप गुजरात क्षेत्र अराजकता एवं अव्यवस्था का शिकार हो गया। प्रतिहारों तथा राष्ट्रकूटों के पतन के उपरांत चौलुक्यों को गुजरात में अपनी सत्ता स्थापित करने का सुअवसर प्राप्त हो गया। चौलुक्य शासक धार्मिक रूप से सहिष्णु थे। इस काल में जैन एवं शैव धर्म का समन्वय मिलता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि चौलुक्य राजवंश ने सांस्कृतिक, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में विशेष उन्नति की।

मूल शब्दः चौलुक्य, प्रतिहार, प्रबंधचिंतामणि, अन्हिलवॉड़, चाहमान, राष्ट्रकूट आदि

प्रस्तावना
10वीं सदी के मध्य प्रतिहार वंश के अवसान काल में गुजरात में चौलुक्य अथवा सोलंकी राजवंश की स्थापना हुई। उन्होंने गुजरात तथा काठियावाड़ पर लगभग तीन सौ (950 ई0 से 1300 ई0) साल तक शासन किया। उनकी राजधानी अन्हिलपाटक या अन्हिलवाड़ थी; जो कि आधुनिक पाटन है। इसे अन्हिलपुर, अन्हिलनगर तथा अन्हिलपत्तन नाम से भी जाना जाता है। इस नगर की स्थापना मूलतः चावड़ा वंश के शासक वनराज ने 746 ई0 में सरस्वती नदी पर स्थित प्राचीन ग्राम लखाराम के स्थान पर की थी।

चौलुक्य वंश की स्थापना से एक सदी पूर्व ही गुजरात पर कन्नौज के गुर्जर प्रतिहार की प्रभुसत्ता स्थापित थी और वहां का चापोत्कट वंश गुर्जर प्रतिहारों का सामन्त था। गुजराती अनुश्रुतियों, कुमार पाल की वाड़नगर प्रशस्ति, रत्नमाला और प्रबंधचिंतामणि के विवरणों के आधार पर चौलुक्य वंश का संस्थापक मूलराज को माना जाता है। गुजराती इतिवृतों में इसकी उत्पत्ति की जो कथा मिलती है उसके अनुसार मूलराज, कान्यकुब्ज (कन्नौज) देश के कल्याणकटक के शासक भुवनदित्य के तीन पुत्रों– राजि, बिज तथा दण्डक जेष्ठ पुत्र राजि तथा चापोत्कट वंश के अंतिम शासक सामंत सिंह की बहन लीला देवी का पुत्र था। गुजराती अनुश्रुतियों के अनुसार वयस्क होने पर मूलराज ने अपने मामा सामंत सिंह (चॉपोत्कट वंश के अंतिम शासक) की हत्या कर अन्हिलवॉड़ की राजगद्दी हड़प ली और चौलुक्य वंश की स्थापना की। यद्यपि वर्तमान में हम यह नहीं कह सकते कि इस कहानी में कितनी सच्चाई है किन्तु इससे जो यह प्रमाणित होता है कि आठवीं सदी ईस्वी के पूर्वार्द्ध में गुजरात पर चापोत्कट वंश राज्य कर रहा था।

वॉडनगर प्रशस्ति के अनुसार राज्य सिंहासन हड़पने के बाद मूलराज ने प्रजा को अपने पक्ष में करने के लिए करों में कमी कर दी और प्रजा का प्रिय बन गया। प्रशस्ति में कहा गया है कि ''चापोत्कट राजाओं की राजलक्ष्मी को कैद कर उसे अपने संबंधियों, ब्राह्मणों, चारणों और भृत्यों के कौतुक का विषय बनाया।'' उसके कादि अभिलेख में कहा गया है कि उसने सारस्वत क्षेत्र की विजय अपने बाहुबल से की। राज सिंहासन हड़प कर उसने अपना साम्राज्य विस्तार भी किया जिसके लिए उसे अपने पड़ोसी राज्यों से संघर्ष करना पड़ा।

चाहमान आक्रमणः इस समय शाकंभरी में चाहमान शासन विग्रहराज द्वितीय शासन कर रहा था। 'सुर्जनचरित्र', 'पृथ्वीराजविजय', 'हम्मीरमहाकाव्य', 'प्रबंधचिंतामणि' आदि ग्रंथों से यह ज्ञात होता है कि विग्रहराज द्वितीय ने लाट के शासक वारप्प के साथ सम्मिलित योजना बनाकर चौलुक्य राज्य पर आक्रमण किया। विग्रहराज ने उत्तर और लाट नरेश ने दक्षिण से आक्रमण किया था जिसमें विग्रहराज की सेना का आक्रमण था। मूलराज ने भागकर कन्थादुर्ग में शरण ली। विग्रहराज महीनों तक उसके साम्राज्य का रौंदती रहा अन्ततः विवश होकर मूलराज को विग्रहराज के शिविर में जाकर संधि की प्रार्थना करनी पड़ी। 'हम्मीरमहाकाव्य' के अनुसार चाहमान शासक द्वारा मूलराज मारा गया। किन्तु इस कथन को प्रमाणित नहीं माना जा सकता क्योंकि स्पष्ट रूप एवं प्रमाणिक रूप से ज्ञात है कि विग्रहराज की शासनकाल के बाद भी मूलराज 996 ई0 तक जीवित रहा। इस प्रकार मूलराज चौहान आक्रमण का प्रतिरोध करने में असफल रहा इसकी पुष्टि 'प्रबंधचिंतामणि' द्वारा भी होती है।

लाटविजयः इस समय लाट राज्य कल्याणी के चालुक्य शासक तैलप द्वितीय के अधीन था। जहां चालुक्य के सामंतों के रूप में बारप्प और उसका पुत्र गोग्गिराज शासन करते थे। मूलराज के विरुद्ध चाहमानों का साथ देने की बात से क्रोधित होकर चाहमानो के वापस चले जाने पर मूलराज ने बारप्प से बदला लेने का दृढ़ निश्चय किया। हेमचंद्र के 'द्वाश्रयकाव्य' से ज्ञात होता है कि मूलराज के पुत्र चामुंडराज ने बारप्प के व्यवहार से अप्रसन्न होकर श्वभ्रवती नदी पार कर उस पर आक्रमण कर उसे पराजित करके उसके हाथियों को छीन लिया किंतु सोमेश्वर कृत 'कीर्तिकौमुदी' में कहा गया है कि बारप्प मूलराज द्वारा मारा गया। बारप्प चाहे केवल पराजित हुआ हो अथवा मारा गया हो किन्तु यह निश्चित है कि मूलराज ने थोड़े समय के लिए लाट पर अधिकार अवश्य किया था। क्योंकि बारप्प के पुत्र गोग्गिराज को शत्रुओं से अपने राज्य को मुक्त कराने का श्रेय दिया गया है।

परमार मुंज से संघर्षः डॉ0 ए0 के0 मजूमदार के अनुसार मूलराज की लाट विजय की कारण परमार शासक वाक्पतिमुंज से चौलुक्यों (मूलराज) में संघर्ष प्रारंभ हो गया। मत के प्रमाणस्वरूप मजूमदार उदयपुर प्रशस्ति का उल्लेख करते हैं जिसमें

वाक्पतिपुंज द्वारा लाट पर विजय का उल्लेख है। किंतु यह प्रशस्ति तथ्यपरक, ऐतिहासिकता और कोरी प्रशस्ति की ऐसी पंचमेल खिचड़ी है जिससे वास्तविक तथ्यों को निकालना कठिन है। यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि लाट पर आक्रमण कर मुंज ने बारप्प को पराजित किया था या मूलराज को क्योंकि दोनों के क्षेत्र लाट की सीमाओं से सटे होने के कारण दोनों पर आक्रमण के बराबर के आसार हो सकते थे। डॉ0 प्रतिमाल भाटिया का मानना है कि मुंज ने बारप्प को पराजित किया था। डॉ0 हेमचन्द्र राय, डॉ0 धी0 च0 गांगुली और दशरथ शर्मा सिन्धु राज के राज दरबारी कवि पद्मगुप्त की कुछ वाक्पति प्रशंसक श्लोकों तथा हस्तिकुण्डी के राष्ट्रकूट शासक धवल के बीजापुर अभिलेख के आधार पर यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मूलराज वाक्पतिपुंज से कहीं मेवाड़ या मारवाड़ में पराजित हुआ।

सुराष्ट्र और कच्छ विजयः सारस्वतमंडल की दक्षिण और पश्चिम में स्थित सुराष्ट्र और कच्छ राज्यों की विजय कर मूलराज ने अपने राज्य का विस्तार किया था। हेमचंद्रकृत 'द्वाश्रयकाव्य' और उसकी टीकाकार अभयतिलकगड़ी से पता चलता है कि सौराष्ट्र का शासक ग्रहरिपु अथवा ग्राहरि था यह अभीर जाति का था। मूलराज ने स्वयं इसको सौराष्ट्र का शासक नियुक्त किया था किन्तु ग्रहरिपु नें उज्ययन्त में चमड़ी मृगों को मारने प्रभासतीर्थ के तीर्थ यात्रियों को लूटने गोमांसभक्षण, परस्त्रीगमन और मदिरासेवन की अपनी आदतों के कारण मूलराज को अप्रसन्न होकर कर दिया। इसके साथ ही इसने भी मेडों, भीलों और कच्छ के शासक लक्ष अथवा लाखा को भी अपनी ओर मिला कर अपनी शक्ति वृद्धि भी करने लगा। ग्रहरिपु की बढ़ती हुई सैनिक शक्ति तथा लक्ष जैसे अन्य शक्तिशाली राजाओं के साथ सहसंबंध से चिंतित हो उठा। भविष्य में ग्रहरिपु कहीं चौलुक्य सत्ता के लिए समस्या न बन जाए यह सोच कर मूलराज ने ग्रहरिपु पर आक्रमण कर उसे समाप्त कर देने में ही अपना हित समझा और प्रभासतीर्थ के तीर्थ यात्रियों को लूटने का दोषारोपण करते हुए ग्रहरिपु पर आक्रमण कर दिया। द्वाश्रयकाव्य से ज्ञात होता है कि इस युद्व में ग्रहरिपु की ओर से कच्छ के शासक लक्ष (लाखा), सिंधुराज, भील और मलेच्छों ने युद्ध किया, जिसमें ग्रहरिपु बंदी बनाया गया और कच्छ का शासक लक्ष मारा गया। सुराष्ट्र के लोगों के द्वारा आत्मसमर्पण करने के कारण मूलराज ने उन्हें कैद से मुक्त कर दिया तथा स्वयं प्रभासतीर्थ दर्शन हेतु चला गया। कच्छ के शासक लक्ष्य की पराजय की पुष्टि 'कीर्तिकौमुदी', 'वसंतविलास', 'सुकृतसंकीर्तन' और 'प्रबंधचिंतामणि' आदि में वर्णित है कि मूल राज को लक्ष–लाख ने 11 बार हराया था किंतु 12वीं पर मूलराज ने लक्ष पर आक्रमण कर उसे मार डाला। आगे चलकर सौराष्ट्र स्थित सोमनाथ का शिव मंदिर चौलुक्य राज्य का प्रसिद्ध तीर्थ बन गया। सौराष्ट्र पर चौलुक्य के अधिकार की पुष्टि इससे भी होती है कि चाहमान आक्रमण के समय मूलराज ने कन्थादुर्ग (सौराष्ट्र) में शरण ली थी।

इस प्रकार परमारों और चाहमानों से संघर्ष मूलराज की राजनीतिक महत्वाकांक्षा को दर्शाता है। चापोत्कट वंश का अंत कर अन्हिलवाड़ के चौलुक्य सत्ता स्थापित करते हुए उसने जिस राज्य की नींव डाली थी वह कालांतर में एक साम्राज्य के रूप में विकसित हुआ और यह राज्य शिक्षा, साहित्य तथा धर्म संस्कृति का उन्नायक तथा पोषक सिद्ध हुआ। मूलराज नें लगभग 941 ई0 से 966 ई0 तक शासन किया। मूलराज ने अपने पुत्र चामुंडराज को युवराज नियुक्त के प्रशासन का दायित्व उसके हाथों में सौंप रखा था।

: हेमचंद्र और मेरुतुंग के कथन अनुसार मूलराज ने अपने जीवन के अंतिम काल में अपने पुत्र चामुंडराज को सिंहासन सौंप कर स्वयं सन्यास ले लिया। चौलुक्यों और परमारों का जो संघर्ष मूलराज के समय में प्रारंभ हुआ था वह इसके शासनकाल में भी चलता रहा। जयसिंह की 'कुमारपालचरित्र' से ज्ञात होता है कि एक चौलुक्य शासक ने सिंधुराज को युद्ध में मार डाला। मजूमदार जैसे विद्वान इस चौलुक्य शासक को चामुंडराज और सिंधुराज को मालवा का परमार राजा सिंधुराज मानते हैं और यह अनुमान लगाते हैं कि दोनों का संघर्ष लाट क्षेत्र के लिए हुआ होगा। किंतु हेमचंद्र राय इस सिंधुराज का समीकरण सिंध पर शासन करने वाले किसी मुसलमान शासक से करते हैं। कुमारपालचरित की इस सूचना पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि चामुंडराज ने सिंधुराज को मार डाला था। वस्तुतः सिंधुराज पराजित हुआ और कायर की तरह भाग गया। जैसा कि कुमारपाल की गाड़नगर प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि कुछ भी हो इतना तो निश्चित है कि चामुंडराज लाट पर अधिकार टिक नहीं सका। बारप्प के पुत्र गोग्गिराज ने अपने पश्चमी चालुक्य शासक सत्याश्रय की सहायता से लाट पर फिर से अधिकार कर लिया।

वल्लभराजः चामुंडराज के बाद उसका पुत्र बल्लभराज शासक बना मेरुतुंग के अनुसार इसमें केवल 6 माह तक शासन किया। चेचक की बीमारी से उसकी अकाल मृत्यु हो गई। परिणामतः उसकी कोई विशेष उपलब्धि नहीं रही संभवत इसी कारण कुछ चौलुक्य अभिलेखों और वंश से संबंधित साहित्य में एक राजा के रूप में उसका नाम उल्लेख तक नहीं मिलता है।

दुर्लभराजः बल्लभराज की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई दुर्लभराज सिंहासन पर बैठा। इसकी महत्वपूर्ण उपलब्धि लाट की पुनर्विजय थी जिसका उल्लेख अनेक लेखकों और अभिलेखों में मिलता है लाट में उस समय कीर्तिपाल शासन कर रहा था। दुर्लभराज ने उसे पराजित कर राज्य छीन लिया दुर्लभराज के कोई पुत्र नहीं था उसने अपने भतीजे भीम (छोटे भाई नागराज का पुत्र) का राज्याभिषेक अपने जीवन काल में ही कर दिया भीम को वह बहुत प्रेम करता था।

भीम प्रथमः सिंहासन पर बैठने के कुछ ही समय बाद भीम प्रथम को महमूद गजनवी और परमार नरेश भोज के आक्रमण का सामना करना पड़ा। इन सब से निपट कर उसने तत्कालीन भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और चौलुक्य की सत्ता को सुदृढ़ करने में सफलता प्राप्त की। उदयपुर लेख से पता चलता है कि भोज ने भीम को पराजित किया था किंतु शीघ्र ही भीम ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली। तथा उसने परमार नरेश के विरुद्ध कलचुरी नरेश कर्ण के साथ मिलकर एक संघ तैयार किया। इस संघ ने मालवा के ऊपर आक्रमण कर धारानगर को लूटा

कल्याणी के चालुक्य सोमेश्वर प्रथम ने भी भोज पर आक्रमण कर उसे पराजित किया, धारा को लूटा और भाप पर अधिकार कर लिया। तथा विल्हण के विवरण से पता चलता है कि भोज अपनी राजधानी छोड़कर भाग गया इस प्रकार उसकी प्रतिष्ठा मर्दित हो गई। इसी बीच परमार भोज की हो गई जिससे भीम तथा कर्ण की आपसी संबंध भी बिगड़ गए। जिसका मुख्य कारण धारा से लूटी गई संपत्ति का बंटवारा था। अतः भीम ने कर्ण के विरुद्ध एक दूसरा संघ तैयार किया इसमें परमार जयसिंह द्वितीय जो भोज का उत्तराधिकारी था ने भी भीम की सहायता की थी। जैन ग्रंथों से पता चलता है कि भीम ने कर्ण को भी पराजित किया था हेमचंद के अनुसार भीम ने सिंधु के राजा हम्मुक को पराजित किया था। भीम ने सिंधु नदी पर पुल बनाकर उसके राज्य में प्रवेश कर उसे पराजित किया था। भीम की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि आबू पर्वत क्षेत्र पर अपना अधिकार सुदृढ़ करना था।

भीम के शासनकाल की सबसे प्रमुख यह महत्वपूर्ण घटना है महमूद गजनवी का सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण। गजनवी ने सोमनाथ मंदिर को लूटा तथा मूर्ति को खंडित कर दिया किंतु भीम ने बड़ी बुद्धिमानी के साथ उससे अपनी रक्षा की। फरिश्ता लिखता है कि भीम ने 3000 मुसलमानों की हत्या की थी। उसके आक्रमण का भीम के शासन पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। गजनवी के सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त करके चले जाने के पश्चात

भीम ने उसका पुनर्निर्माण करवाया। उसने 1024 ईसवी तक शासन किया।

कर्ण: भीम का पुत्र कर्ण एक निर्बल शासक था। उसे मालवा के परमारों ने पराजित किया। नाडोली के चौहानों ने भी उसके साथ उसके राज्य पर आक्रमण कर उसकी सत्ता का थोड़े समय के लिए चलायमान कर दिया। 'प्रबंधचिंतामणि' से पता चलता है कि कर्ण ने आशापल्ली के भील राजा आशा के विरुद्ध सफलता प्राप्त की थी। कुमारपाल के चित्तौड़गढ़ लेख में कर्ण के सूदकूप पहाड़ी दर्रे के पास मालवों को जीतने का श्रेय दिया गया है। किंतु इसकी पुष्टि अन्य स्रोतों से नहीं होती। विजयों की अपेक्षा कर्ण की रुचि निर्माण कार्यो में अधिक थी। कर्णावती नामक नगर बसाकर वहां उसने कर्णेश्वर का मंदिर तथा कर्णसागर नामक झील का निर्माण करवाया था। अन्हिल्वाड़ में में कर्णमेरू नामक मंदिर का निर्माण का श्रेय भी उसी को दिया जाता है।

जयसिंह सिद्धराज: कर्ण के पश्चात उसकी पत्नी रानी मयणल्ला देवी से उत्पन्न पुत्र जयसिंह सिद्धराज चालुक्य वंश का प्रसिद्ध राजा बना। जयसिंह सिद्धराज कर्ण के पश्चात उसकी पत्नी रानी मयणल्ला देवी से उत्पन्न पुत्र जयसिंह सिद्धराज चालुक्य वंश का राजा बना। राज्यारोहण के समय वह अल्पायु था। अतः उसकी मां ने कुछ समय तक संरक्षिका के रूप में कार्य किया। इसकी प्रारंभिक सफलताओं में से सौराष्ट्र के आभीर शासक को परास्त करना प्रमुख थी। दोहदलेख के अनुसार जयसिंह ने सुराष्ट्र के राजा को बंदी बनाया था। मेरूतुंग के विवरण के अनुसार परमार शासक यशोवर्मन को सिद्धराज पराजित किया था। 'कुमारपालचरित' के अनुसार उसने धारानगरी को ध्वस्त कर वहां के शासक नरवरमन की हत्या कर दी थी। जयसिंह ने अपने समकालीन शाकंभरी चाहमान शासक अर्णोराज को युद्ध में पराजित किया किंतु बाद में उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर मित्रता सम्बंध स्थापित किए।

दोहदलेख के अनुसार उसने सिन्ध के राजा को पराजित कर तथा उत्तर के शासकों को स्वयं के समक्ष नतमस्तक होने के लिए विवश किया। इस प्रकार जयसिंह सिद्धराज ने चौलुक्य साम्राज्य को शीर्ष पर पहुंचाया। वह अपने समय का महान विजेता, साम्राज्य निर्माता, विद्या एवं कला का उदार संरक्षक था। 'द्वाश्रयमहाकाव्य' के अनुसार सहस्त्र लिंग के किनारे 108 शैव मंदिरों का निर्माण करवाया था।

कुमारपाल: राज्यारोहण के बाद कुमारपाल अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए सैनिक अभियान किया। उसकी विजयों का विस्तृत वर्णन जयचंद्रसूरी के 'कुमारपालचरित्र' में मिलता है। उसका पालन संघर्ष चाहमान शासक अर्णोराज से हुआ जिसमें अर्णोराज पराजित हुआ और उसने अपनी पुत्री जल्हणा देवी का विवाह कुमारपाल से कर मैत्री संबंध स्थापित किए। जैन ग्रंथ के अनुसार कुमारपाल ने मालवा के शासक बल्लाल पर आक्रमण कर उसे मार डाला। मेरूतुंग के अनुसार कुमारपाल ने सुराष्ट्र के राजा सुम्बर को पराजित किया और सुम्बर के पुत्र को सुराष्ट्र का राजा बना दिया, जिसने चौलुक्य के नरेश की अधीनता स्वीकार कर ली। कुमारपाल ने जयसिंह से प्राप्त विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखा। अपने जीवन काल में उसमें कमी नहीं होने दी। अपने समय के प्रमुख शक्तियों को पराजित कर उसने चोल साम्राज्य का विस्तार किया तथा उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया।

अजयपाल: गुजराती अनुश्रुतियां तथा मुस्लिम स्रोतों के अनुसार कुमारपाल की विष द्वारा हत्या कर दी गई। उसके पश्चात उसका भतीजा अजयपाल शासक बना। इसने 1176 ईस्वी तक शासन किया। इसकी उपाधि ''परममाहेश्वर'' मिलती है। उसने सपादलक्ष्य के चाहामान शासक सोमेश्वर को पराजित किया था। इसने जैन आचार्य रामचंद्र एवं अपने मंत्री कपर्दि की हत्या कराई तथा अनेक साधुओं की हत्या कराई तथा जैन मंदिरों को ध्वस्त करवा दिया था। सैनिक दृष्टि से उसके बारे में यही उपलब्धियां मिलती हैं। उसके किसी नौकर ने छुरा घोंककर उसकी हत्या कर दी।

भीमदेव द्वितीय: यह अजयपाल का पुत्र था। इसे तुर्क आक्रान्ता को पराजित करने के कारण 'मलेच्छ' या 'हम्मीर' कहा गया। इसने मात्र ढाई वर्ष तक शासन किया।

इसके पश्चात इसका छोटा भाई भीम द्वितीय राजा बना। आबू तथा नागौर क्षेत्र पर अधिकार हेतु उसका चाहमान शासक पृथ्वीराज से संघर्ष हुआ, बाद में दोनों के मध्य समझौता हो गया। इसके शासनकाल में 1178 ईस्वी में मोहम्मद गोरी के नेतृत्व में तुर्कों का आक्रमण हुआ, जिसका भीम ने सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया। इसके अतिरिक्त भीम को परमारो, यादवों के साथ–साथ आंतरिक विद्रोहों का भी सामना करना पड़ा। आंतरिक स्थिति निर्बल पड़ने से उसके अधीन रहे सामंतों को स्वाधीन होने का सुनहरा अवसर प्राप्त हो गया। जिसका लाभ उठाते हुए जैत्तसिंह नामक उसके ही किसी सम्बंधी ने ही भीम को पदच्युक्त कर राजधानी पर कुछ समय के लिए अधिकार कर लिया था किंतु अपने योग्य मंत्रियों लवणप्रसाद एवं वीरधवल की सहायता से पुनः राजधानी पर अधिकार कर लिया। भीमदेव द्वितीय गुजरात के चौलुक्य (सोलंकी) वंश का अंतिम शासक था इसके पश्चात उसके मंत्री लवणप्रसाद ने गुजरात में बघेल वंश की स्थापना की।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अन्हिल्वाड़ के चौलुक्यों के शासन का एक बड़ा हिस्सा बाहरी संघर्ष एवं साम्राज्य विस्तार हेतु संघर्ष से जुडत्रा रहा। कतिचय यह प्रक्रिया चौलुक्य वश के संस्थापक मूलराज से प्रारम्भ होकर राजवंश के पतन तक अनवरत चलती रही।

निष्कर्ष

चौलुक्यकालीन कला एक सुन्दर, धर्म सहिष्णु, उत्कृष्ट एवं भव्य कलात्मक संस्कृति का परिचय देती है। चौलुक्यकालीन शासक महान् प्रजा हितचिन्तक, कुशल प्रशासक एवं उदार संस्कृति–संरक्षक भी थे। 'महाराजाधिराज', परमभट्टारक, 'परमेश्वर' की उपाधियों के अतिरिक्त वह 'अदन्तिनाथ', 'महासिद्धश्चक्रवर्ती', 'बर्बरकजिष्णु', 'त्रैलोक्यमल्ल' और 'सिद्धराज' कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। इन्होंने सिद्ध संवत् नामक एक नया संवत् चलाकर चौलुक्य इतिहास में अपने को युगनिर्माता के रूप में बताया। सोमनाथ मन्दिर के तीर्थयात्रियों को कर मुक्त कर प्रजावत्सल सम्राट होने का परिचय देते हैं। चौलुक्य शासक विद्या और संस्कृति के महान उन्नायक थे। इनके दरबार में हेमचन्द्र, श्रीपाल (वाडनगर प्रशस्ति के रचयिता) इन्हें 'कविचक्रवर्ती' तथा कवीन्द्र भी कहा जाता था। रामचन्द्र, कविशिखा के लेखक जयमंगल, मुद्रितकुमुदचन्द्र नाटक के रचयिता यशश्चन्द्र और प्रसिद्ध श्वेताम्बर विद्वान देवसूरि आदि इस काल के प्रमुख विद्वान, लेखक एवं रचनाकार थे। चौलुक्य शासक जयसिंह सिद्धराज ने ज्योतिष, न्याय, पुराण आदि के अध्ययन के लिए विद्यालय स्थापित करवाएं उसने जैन विद्वान् हेमचन्द्र तथा अन्य जैन भिक्षुओं को सम्मानित किया तथा विभिन्न सम्प्रदायों के साथ वह धार्मिक चर्चाएँ करता था। चौलुक्य शासक धार्मिक रूप से सहिष्णु थे। इस काल में जैन एवं शैव धर्म का समन्वय मिलता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि चौलुक्य राजवंश ने सांस्कृतिक, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में विशेष उन्नति की।

संक्षेप में कहीं तो अनिल वालों की रात चालू क्यों को शासन का एक बड़ा हिस्सा भारी संघर्ष साम्राज्य विस्तार हेतु संघर्ष से जुड़ा रहा कृपया प्रक्रिया चालुक्य वंश के संस्थापक मूल राज्य से प्रारंभ होकर वंश के पतन तक अनवरत चलती रही।

सन्दर्भ सूची

1. विशुद्धानन्द पाठकः 'उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास'

उत्तर प्रदेश हिन्दी सन्स्थान, लखनऊ
2. असोज, जे0एन0: 'स्टडीज इन राजपूत हिस्ट्री एण्ड कल्चर'।
3. गौरीशंकर हीरानन्द ओझाः 'राजपूताना का इतिहास' अजमेर 1933
4. डा0 विमलचन्द्र पाण्डेयः 'प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास' (320–1200 ईस्वी)
5. मजूमदार अशोक कुमारः चौलुक्य ऑफ गुजरात, भारतीय विद्या भवन, 1961
6. गांगुली डी0 सी0: हिस्ट्री ऑफ दि परमार डायनेस्टी, ढाका यूनिवर्सिटी प्रेस, 1933.
7. हेमचन्द्रः 'द्वाश्रयकाव्य'।
8. सोमेश्वरकृत : 'कीर्तिकौमुदी'
9. जयसिंहसूरि का 'कुमारभूपालचरित
10. डा0 रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास।
11. आर0ए0 अग्रवाल, भारतीय चित्रकला का विवेचना।